Lecture No - 03

Name of the college - A.P.S.M. college, Barauni, Begusarai.
L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)

Deptt - A.I.H & C

Lession / Plan B.A part I (H) A.I.H & C Paper I

Name of the Topic - महाकाव्यकालीन सभ्यता

Date - 16-06-2021

'रामायण' और 'महाभारत' का भारतीय साहित्य में बहुत अधिक महत्व है। इन दोनों ग्रंथों को अत्यंत श्रद्धा (आदर) और सम्मान के साथ देखा जाता है। रामायण की रचना वाल्मीकि ने मानव-जीवन के सर्वोच्च आदर्श की शिक्षा प्रदान करने के अभिप्राय से की थी। रामायण में जीवन के समस्त क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है। महाभारत में न केवल कौरव-पांडवों के युद्ध का वर्णन है, बल्कि उस काल के समस्त क्षेत्रों पर भी उसके द्वारा प्रकाश पड़ता है। महाभारत सर्वप्रधान काव्य, सर्वदर्शनों का सार, स्मृति, इतिहास और चरित्रचित्रण की खान तथा पंचम वेद है। महाभारत ऋग्वेद के बाद संस्कृत-साहित्य का सबसे प्रकाशमान एवं देदीप्यमान रत्न है। यह काव्य बड़ा विशालकाय और इसकी समता अन्य कोई काव्य नहीं कर सकता। रामायण 24000 श्लोकों का प्रबंधकाव्य है। अठारह पर्वों के महाभारत में करीब एक लाख श्लोक है। महाभारत में अनेक प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक कथाएँ सन्निहित है। 'श्रीमद्भागवतगीता' जैसा महत्वपूर्ण ग्रंथ भी इसी से जुड़ा हुआ है। 'हरिवंशपुराण' भी इसी का एक भाग है। इन दोनों ग्रंथों के अध्ययन से तत्कालीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान होता है।

समाज - सामाजिक जीवन का आधार वर्णव्यवस्था ही था। वर्ण का निर्धारण गुण और कर्म के अनुसार होता था। गीता में चतुर्वर्णों की व्याख्या एवं उत्पत्ति गुण और कर्मों के आधार पर ही बताई गई है। एक वर्ण का व्यक्ति अन्य वर्ण में भी काम कर सकता था। यद्यपि द्रोणाचार्य ब्राह्मण थें, फिर भी उन्होंने कौरवों और पांडवों को धनुर्वेद की शिक्षा,

P.t.o.

प्रदान की। भीष्म क्षत्रियकुल में उत्पन्न हुए थे, परन्तु वे एक तत्वज्ञानी और तत्ववेत्ता भी थे। सम्यक रूप से प्रतिष्ठित वर्ण-व्यवस्था के बावजूद अपने कर्तव्य की उपेक्षा करनेवाले ब्राह्मण सम्मान के अधिकारी नहीं रह जाते थे। धर्मसंग्रह ब्राह्मणों के लिए वर्जित था। छह ⑥ प्रकार के ब्राह्मणों का उल्लेख महाभारत में है। —

(1) ब्रह्मसम
(2) देवसम
(3) शूद्रसम
(4) चांडालसम
(5) क्षात्रसम
(6) वैश्यसम

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, और कृपाचार्य क्षत्रिय-कर्म का अनुसरण कर रहे थे। कृषि और पशुपालन द्वारा जीविकोपार्जन करनेवाले ब्राह्मणों का भी उल्लेख महाभारत में है। क्षत्रिय लोगों का मुख्य कार्य चतुवर्णों का संरक्षण था। कई स्थानों पर ऐसे भी उल्लेख मिलते हैं; जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्णव्यवस्था जन्मना न होकर कर्मणा थी। रामायण में एक स्थान पर कहा गया है कि सीता से ही कोई क्षत्रिय हो सकता है, और उसी प्रकार महाभारत में कहा गया है कि शूद्र भी कर्म के अनुसार क्षत्रिय हो सकता है। परन्तु ये सारे छिटपुट उदाहरण ही हैं। वास्तविकता यही थी कि वर्ण पूर्णतः जन्मना ही बना रहा। वैश्यों का प्रमुख ध्येय धनार्जन था। शूद्र समाज का निम्नतम वर्ग था। अनधिकारपूर्ण तप करते हुए शंबूक शूद्र को रामचंद्र ने स्वयं अपने हाथों से मार डाला था। शूद्र विद्याध्ययन के लिए कुलपति के आश्रम में नहीं जा सकता था। उसे अध्यापन का भी अधिकार नहीं था। विदुर ने स्वयं कहा था कि शूद्र होने के कारण मैं शिक्षा नहीं दे सकता। शूद्र वर्णाश्रम व्यवस्था के भी बाहर था। महाभारत में कुछ शूद्रों के आदर सत्कार के भी उदाहरण मिलते हैं। विदुर धर्मव्याध और मातंग। राजसूययज्ञ के अवसर पर युधिष्ठिर ने शूद्र-प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया था। इन चार वर्णों के अतिरिक्त अन्यान्य जातियों का भी उल्लेख महाभारत में मिलता है। PTO

ऊँ० आयोगव – (शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री की संतान)
उग्र – (क्षत्रिय पुरुष और शूद्र स्त्री की संतान)
करण – (क्षत्रिय पुरुष और वैश्य स्त्री की संतान)
चांडाल – (नापित पुरुष और ब्राह्मण स्त्री की संतान)
निषाद – (ब्राह्मण पुरुष और ~~वैश्य~~ शूद्र स्त्री की संतान)

वर्णसंकर – जातियों की संख्या काफी बढ़ गई थी। महाभारत में जन्मगत महत्व को छोड़कर शील का महत्व स्वीकार किया गया है। जाति के सम्बंध में युधिष्ठिर का मत है कि सब वर्णों का इतना मिश्रण हो चुका है कि आज जाति कि परीक्षा कठिन है। सभी जातियों में संतान उत्पन्न होते हैं। अतः तत्वदर्शियों ने शील को ही प्रधानतः इस निश्चित किया है।

रामायण में यवन और शक का वर्णन है। महाभारत में यवण, शक, किरात, पह्लव, चीन, हूण तथा बर्बर जातियों का उल्लेख है। वर्ण – व्यवस्था के साथ ही साथ वर्णाश्रम – व्यवस्था भी दृढ़ हो चुकी थी। महाभारत में एक स्थान पर कहा गया है कि वर्णाश्रम समस्त वर्णों के लिए है परन्तु व्यवहार में ऐसी बात नहीं थी। स्त्रियाँ भी यदा – कदा संन्यास – आश्रम में प्रविष्ट होती थी। इनमें मेधावी सुलभा और शबरी के नाम उल्लेखनीय है।

भारती कुमारी
A.D.M.C
Date 16-06-2021